

॥ श्रीगणेश ॥

॥ श्रीरामविजयनवत्रिंशतिमोऽध्यायप्रारंभः ॥



2

श्रीशाम॥
॥१॥

॥ श्रीमाहागणाधिपतेयनमः ॥ देवाधिदेवराजिवनेत्र ॥ पुराणपुरोधधनःशामगात्रा ॥ लिकादास्वविवित्रा ॥ अकजन्ता
 रावया ॥ १॥ सौमित्रपडलारणांगणि ॥ श्रवणिकेकलोकदंडपणि ॥ शोकाकुठिनपडितारणि ॥ सुमंतेसांवरनिउठ
 विला ॥ २॥ अरथेदकधेउनिअपरमित ॥ समागेमंथेनलाहनुमंत ॥ तोंसरसाउनिशितासुत ॥ दोधेहिपुढंधाविले ॥ ३५
 हनुमंताच्याकर्णिसमस्त ॥ अरथसांगतसेगुजाल ॥ लपेहनाधवाभैसेदिसत ॥ शितासुतनिश्वये ॥ ४॥ अरथका ॥ विजया ॥
 णिहनुमंत ॥ रणिविलेकितिसमस्त ॥ तोंसरसाउनिशितासुत ॥ दोधेहिपुढंधाविन्नेले ॥ ५॥ ड्यानकिहेरतिगणि ॥ ११॥
 तेविचारावविंशाप्रविलिनि ॥ हनुमंतसमजलितान ॥ असेंभगमंतानेचये ॥ ६॥ वैरागरावांचुन ॥ रलेन
 होतिनिमाण ॥ हेड्यानकिचेनंदन ॥ मलाहिपुण्यकृतेसर ॥ ७॥ तवलहुशरणकुशविरा ॥ पैलतोनरबाणिवान्त ॥
 हलकुचिकरितिविचार ॥ तेनुजकांहिंसमजले ॥ आहाहाधांयुध्यागेउनि ॥ शामकर्णन्यावपकउनि ॥ हेचितिंधरि
 उलयणि ॥ सांगलिकाणियेकमेका ॥ १॥ लखुराहिंशामकर्ण ॥ यांशिमियुध्यकरितोनिर्वाण ॥ असेंकुशविरबोलेना ॥
 सरसाउनिपुढंभाला ॥ १०॥ धनुष्याशिलाउनिवापा ॥ अरथाप्रतिबोलेवचन ॥ तुंवाडिलकायतसुमणाहुन ॥ तुशिआंगवनथोर
 दिसतसे ॥ ११ ॥

२५

दुर्ज्ञेनावकायसंगसत्वर ॥ पितानुज्ञाकोठिलकपवर ॥ तुवांपूर्विंयुध्यदुर्धरा ॥ कोणशिकेलेसांगपां ॥ १२ ॥ माझेनाव
 पुन्यशियक्षाणि ॥ तरिमिकुशेंद्रविरचुडासणि ॥ यात्रपरिभ्रमरथतेक्षणि ॥ जालकायबोलता ॥ १३ ॥ अणेलेकुराजायय
 धुन ॥ तुजमादिधेलेजिवदन ॥ अरथेभजसोडिवेलेसोणन ॥ सांगजापुलेमातेशि ॥ १४ ॥ मगकराबोलिलाहासोना ॥
 तुसेबंधुपडलेदेवेजण ॥ त्याचासुडधावयापूर्ण ॥ रामेतुसधाडिलेवनाशि ॥ १५ ॥ युध्यसांडुनिसांगशिगोशि ॥ बंधु
 चासुडनधेशिउठाउगि ॥ तरितुंबासांरणिदुजनिपाशि ॥ अथाथेशिजाईर ॥ १६ ॥ पाठिमोस्थशिनमासंजाण ॥
 तुजबाहिंभयदिधेलेपूर्ण ॥ कोणनुज्ञाजाहोरधुनेदन ॥ याशिधुनयेईवेगि ॥ १७ ॥ जैसेबोललेशितानंदन ॥
 अरथेचापशिलाविलावाण ॥ आकर्णपर्यंतवेदुन ॥ कुवाविसाडिलवेग ॥ १८ ॥ शितात्मजेशरटाकुन ॥ मध्ये
 चितेडिलालेवाण ॥ सेवेचिशरजाक्यालुन ॥ केटककहुलसकरिले ॥ १९ ॥ अरथजेजेबस्त्रसेडिता ॥ लेंकदान
 गणिशितासुत ॥ युध्यविद्यासरन्नास्यमसा ॥ परितोबाकनाटोपो ॥ २० ॥ अरथेप्रेरिलेकार्तिवृत्तियास्त्रा ॥ सहस्रत्ररा
 चेप्रथलेविरा ॥ बाणसेडितिअपारा ॥ हाकेबंवरगाजविलि ॥ २१ ॥ जैसेदेखलाराधवकुमेरा ॥ मार्गवास्त्रसेडिलेवरे ॥

3

श्रीराम
॥२॥

कालिकविर्ययेकसरं॥ आठेनिगुसजालेले॥१२॥ मगमरथेंप्रेरिलकाकरात्रि॥ तोंशिलासुतेनेभवसरिं॥ अचुकसे
 घाननिघोरिं॥ द्वादशादिसप्रघटविले॥१३॥ साप्रकाशनकंसावेके॥ विरंविगेक्तापला॥ मरथमणेककिकाक
 शिकलाविलनाटोप॥१४॥ मरथेंसोडिलाहेसासुरा॥ कुशेंप्रेरिलाशक्तिअपार॥ मरथप्रेरिंत्रिककास्त्र॥ येंमस्मासु
 रसोडिला॥१५॥ मगकुशेंद्रतेवेके॥ सूर्यसुरक्वापकाडिला॥ जैशिमैघालुनिनियेचपका॥ तैसागेलावरने॥१६॥
 मरथाचहृदयेउना॥ रवउत्तरलातोदिव्यबाण॥ सूर्यदनावतानेउलेउना॥ मरथरवालेपडियेला॥१७॥ इकपुर्विका
 टेलंसमस्त॥ जैसांद्रिष्टेस्वोनिहनुमंत॥ घेउनेयेकाविशोकपर्वत॥ कुशावरियाविन्नला॥१८॥ अवडोनिबेकांमि
 रकविला॥ कुशेवज्रशरबाणसोडिला॥ अचुकफेरांनियेष्टेक॥ घुरकाउउलाजवरिं॥१९॥ मासनिचहृदयलहु
 ना॥ सोडिलेलेकांपांचबाण॥ तोवज्राशरिरिमुठ्यायेउना॥ धरिणिवरिपडियेला॥२०॥ इकडेविभिषणअणिरघु
 नंदना॥ विचारकरिलबैस्येलेपुर्ण॥ बाळक्रेडकोणाचेकोपा॥ युध्यनिर्वाणकरिलालि॥२१॥ तोंअकरमातबालिमाबा॥
 किरिणपडला॥ मरथविरा॥ सुठनायेउनिहनुमंत॥ रणांगणितकमळि॥२२॥ विभिषणअणेरघुनाया॥ आतंका

विजय
॥२॥

3A

सयत्वायेज्ञकरिता ॥ परमाश्चिर्यहेसमर्था ॥ जाउनियां पाहोवें ॥ ३३ ॥ रघुविरते कौबोले वचन ॥ काळकैसा परमकवि
 ॥ बंधुपडले लिघे जण ॥ कुकक्षयपुर्णमां उला ॥ ३४ ॥ परमक्रोधवला रघुनंदन ॥ तो दुनिदा विलेयज्ञं कं कृण ॥ होम
 द्रव्ये उलंढुन ॥ शिता रमण उगिता ॥ ३५ ॥ हुडबडिलि अयोध्या सर्व ॥ निशापिन वाजलि घाय ॥ रथासठ होठ वि
 राधव ॥ पवनवेगें घा विलला ॥ ३६ ॥ विमिषण सुयं वड्या बुवंत ॥ ठकनिक शरमवा किलुत ॥ अयोध्येचे हकस
 मस्त ॥ परमवेगें घा वलसे ॥ ३७ ॥ वर्षावका विगें गे सुधुला ॥ आगरा प्रसिद्धा लिसुखरा ॥ लैसे नरवा न्नरंवे आरा ॥
 रथासमुद्राज वळि आले ॥ ३८ ॥ लिघे बंधुपडिले रणरागि ॥ ते नयनि विले किंच्यापपणि ॥ किं नमस्कारचा
 तले धरणि ॥ लिघे मीठे नये कदा ॥ ३९ ॥ तुझे केंवें वाजलि गजिलें यथार्थ ॥ ह्यणो निपुध्विरिन मस्कार करि
 ता ॥ असो प्रसं देव निरघुनाधी ॥ मनि परमक्षेमला ॥ ४० ॥ तव विरदोप्ये देरि वले नयनि ॥ शामसुंदर बाकंदे नि ॥
 येका कडे येक पाहोनि ॥ गे हिं करिता लि कौतुकें ॥ ४१ ॥ कौपिन मुजियज्ञो पवित ॥ तेणे शोभिलि किशोर वस्यता ॥
 मायांचि तिन वा उडल ॥ दिक्षिणा गिल परदकाते ॥ ४२ ॥ असो रक्षपाषाण येठन ॥ धा विले येकदा चिकान्न रगणा ॥

५

॥ श्रीरामा ॥
॥ ३१ ॥

तो दोष निघनु व्यंच ठउना ॥ सरसा उनिपुढं जाले ॥ ४३ ॥ आश्विर्य करिरघु नंदना ॥ सोडित बाणा पाठि बाणा ॥
 मगेंद्रा निसेगर्जे नि ॥ येवचने वोलति ॥ ४४ ॥ घालले असंभाव्य बाण जाका ॥ जजरके लेव विरस कका ॥ शिक
 वरि फेडुन वाकाक ॥ परदका वरि दिकति ॥ ४५ ॥ अनिवार वाक कंत्वा मना ॥ नसेस्य विलिदा रणशरा ॥ प्रेतं पड
 लि अपारा ॥ उरलवा वरप कृति मये ॥ ४६ ॥ हुनु मंत मा विमना वा ॥ उर्ध्व पंधे उतरो न न कस्मात् ॥ पुछं बाधो नि
 दोषे स्त्री स्ता ॥ नाचवा पादि आयावे ॥ ४७ ॥ उजपोहं ब्रह्म नि क्रमरा ॥ तो कुशे टा किला सवक शरा ॥ त्याचे हृदई लागे ॥ विजया ॥
 निसखरा ॥ बाणो पश्चि वरि पाडिला ॥ ४८ ॥ कुबं द्र वा ल व चना ॥ मरि कटा उगा चरो हं ये कृष्णा ॥ तुं वा विध्वंसिलें ज ॥ ३१ ॥
 शो कवन ॥ तं ये येन वाले सर्वथा ॥ ४९ ॥ टाका वेष्टे द्वा बाणि गाषाणी ॥ हे राक्षस्यु ध्येन के जाणा ॥ तो न के गिरि द्रोणा ॥
 उपडे निबक न्यावया ॥ ५० ॥ गोवध पदं जिवना ॥ पुरषा ये जोगि शि समुद्र उडान ॥ रावणा चें नगर जा किलें पुषा ॥
 तं ये येन वाले आश्रि ॥ ५१ ॥ हासं थाम शिंधु परम दुर्धरा ॥ ये ये जयन पा वरि शि तुवा वरा ॥ आ मुचे जन निशि
 तुज पारा ॥ मे हनु साला गलासे ॥ ५२ ॥ तेष्य क्षपा आठ विना ॥ क्षणे नि तुजर सि ले ये य ॥ उगा चिरो हं निवांता ॥
 जसा पवत जन्म तन ॥ ५३ ॥ तो वृक्षे घउनि सखरा ॥ पुढे धा विन्न लामित्र पुत्रा ॥ बाण घालें तत वरा ॥ लहु वेतोडिला हूनि वा ॥ ५४ ॥

(५४)

स्रष्टुमैकरचंडाशस्तुता ॥ तोमगिलकाकरहिलजालो ॥ तुझापलिलंशितत्वला ॥ शिखालविनबाजियेयें ॥ ५५ ॥
 वळिजेष्टबंधुमाखन ॥ त्यचिस्त्रिशिकरिशगमन ॥ ज्याच्यावेळकलेपुर्ण ॥ त्याचेंज्ञानकळोअले ॥ ५६ ॥ तुझामक
 टांशिकंचेज्ञान ॥ परितुझाशिशुरमेवस्तुजाण ॥ उलमन्यायेतेणकन ॥ तारातुजद्विधलि ॥ ५७ ॥ गुप्तकुपथंचाल
 सदां ॥ मगशिष्याशिकेचिमर्यादा ॥ असेप्रायश्चितेयकदां ॥ येईअजिरणांगणि ॥ ५८ ॥ मगधालनियेसहस्त्रवाण ॥
 रणिपाडिलासुर्यनंदन ॥ फणसफकावरिकेदकपुर्ण ॥ शिकेसिमेहेल ॥ ५९ ॥ तोपुढेयाविलाजांबुवंत ॥ त्याप्रति
 कुशविरबालत ॥ आश्वलातुंनिर्वकबहुत ॥ दृष्ट्याअसंनपादीन ॥ ६० ॥ सेसुनियांशतवणि ॥ तोहिपाडिला
 उलधेन ॥ तोधेउनियांपाषाण ॥ नळवाळरथ ॥ ६१ ॥ तयशिलहूबोलेकचन ॥ झणोहतवनकंभेन
 वंधन ॥ पंचबाणदासणसेडुन ॥ तोहिपाडिलारणसुमि ॥ ६२ ॥ अंगदयांविनलासक्रोप ॥ त्यासबोलेराधवकुकदि
 पा ॥ शवणाचासमामंडप ॥ नकेयेथेउचलावया ॥ ६३ ॥ मासियेपाठिशिनिबंधेउन ॥ तुझियापितियाचासुडधेश ॥
 शत्रुचिशेवाकरितांपुर्ण ॥ लाजनवाटमकटा ॥ ६४ ॥ तुझेमालेनेकेलाविभिचार ॥ आजिप्रायश्चितेहेईनसकर ॥

॥ श्रीशम ॥
॥ १४१ ॥

५

ह्रणे निपंच्यशनशर ॥ टाके निअंगदयाडिला ॥ ६५ ॥ असो अरुनुसुतिजाणिसुमंत ॥ रणियाडिले विरसमस्त ॥
मगकोदंडचठउनिरधुनाथ ॥ बाणलाविचायारि ॥ ६६ ॥ वेगसेडिदृशबाण ॥ कुशेशतसेडिलेदारन ॥ सहस्र
शरधुनंदन ॥ टाकितजानातयावरि ॥ ६७ ॥ कुशेंलसबाणमेकिले ॥ राघवेकैटिसावरसेडिले ॥ बाणमं
डपलावेक ॥ झाकोकलेसुर्यबिंब ॥ ६८ ॥ रधुपतिवाहस्तवेगबहु ॥ त्याहुनिकुशविरसेडित ॥ बाणशिनाहिं
गणित ॥ लेखाशेषाशिनकुकुं ॥ ६९ ॥ अनिवारवकवेदोहि ॥ नाटोपतिसुमरंगणि ॥ याउपरिकोदंडपणि ॥
कायकेलेलेयवा ॥ ७० ॥ ह्रणोक्रुपिवाळबेकाहापुण ॥ तदु शिभालुकेमिदंड ॥ करावयादुग्धपान ॥ घेनुदेईनस
वसु ॥ ७१ ॥ पाहोगिनिसुमचेंलावप्यमितुमाशिजा ॥ जेप्रसन्न ॥ जेमागलेतंदेईन ॥ कृपाधनमिवळलो ॥ ७२ ॥
मिबिष्वव्यापकरधुनंदन ॥ सकळदुखपरिहरिन ॥ अनधैरलवाजिवारण ॥ जमोल्सस्येदनशरचापा ॥ ७३ ॥
मगतदेतिप्रतिवचन ॥ आत्मागावयानसवासना ॥ लुंचमागमनकामना ॥ पुणकुरंतुशिजाजि ॥ ७४ ॥ लुसितुं
चिमेगिंसंपनि ॥ लुसिजाणलाभाहिकिर्ति ॥ शोधिताहमिजगति ॥ निर्दयनाहिलुजजेसा ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ विजया ॥
॥ १४१ ॥

58

तुजसाधुलणलकोण॥ अर्थवकिमरिलावाणटाकुन॥ जानकिसरिरेवेचित्रला॥ अन्यायेविणह्वडिले॥ ७५॥ निः
 पापनेशिमगिशिथि॥ तिहुनिपवित्रीशितासति॥ घोरवनिटाकिलेह्वव्याति॥ तुझितुं चवणिकां॥ ७६॥ जैसेदोचेहिबो
 लति॥ प्रत्योतरनेहिरधुपति॥ मनातउपजेबहुप्रति॥ किंदोद्याप्रतिजकिंगवे॥ ७७॥ बळमाषणठिकेनि॥ बाटे
 तथंशिद्योवेचुंबन॥ यानुपरिलेदोचेजण॥ हणतिलपसाडिकेगं॥ ७८॥ तुंहेत्रिभणविशनिर्वाण॥ गेहिंसांग
 तोशिशुधटाकुन॥ लिकावतरिरधुनंदन॥ कायबोलेयापति॥ ७९॥ तुंमिकोणचेकोण॥ जालंकोणवैशितसंन॥
 पितामालेबेनावरुण॥ सांगसंपुणबाह्याप्रति॥ ८०॥ दयाचेंदंवेडंचठाण॥ विद्यदोषांचिसमसमाना॥ वेदशा
 स्त्रपुराणरामायण॥ कोणेतुझाशिपठविते॥ ८१॥ धनुविद्यामंत्रास्त्र॥ ककाकौशल्यतायुक्तिविचित्रा॥ कोणसु
 द्रुसतुझाशिपवित्रा॥ नावत्याचेंसागपां॥ ८२॥ जैसेंबाललांरधुनाथा॥ दोघेगदगदांहासतिलेय॥ रणिबंधुपडिले
 समस्त॥ त्याचारवदसंठितायेण॥ ८३॥ विद्यातुंझिसरलिसकठ॥ रणिपुसमिसांयारिक॥ किंरणिबंधुपडिलेघा
 व॥ दचकवैसलामनितुसे॥ ८४॥ तुजपुसावयाकायकारण॥ सेठिकेगिनिर्वाणवाण॥ बंधुचासुडधेइंपुर्ण॥ मग

6

॥ शिराम ॥
॥ ५ ॥

सोयरिकपुससुरेवं ॥ ८७ ॥ अणशिनयोध्येचान्पवर ॥ वधिलारावणादिअसुर ॥ तेअवधिविद्यावाहिर ॥ कठिआ
 डिपाहुंकेशि ॥ ८८ ॥ आहिअसोंधाकुटेकशोर ॥ तुंपुर्विचजुनाउजुंशर ॥ धनुर्विद्यापठवाशिस्मय ॥ वशिष्टसुप
 करनिया ॥ ८९ ॥ तुंयेकर्पानि वृतिपुर्ण ॥ तरिआनकिविजिअंहुन ॥ अपकिर्तिवरिलिदाहुन ॥ हेनोदुषणजगिजलि ॥ ९० ॥
 युध्येकलियविणसर्वथा ॥ आहितुजनसोडुंजलां ॥ जयवाटतअसेलचित्ता ॥ तरिपकेनिजायअयोध्येशि ॥ ९१ ॥
 दाराकुडुंबतोवुजनाहि ॥ अतासंत्यासधेउनिसुरेकरादि ॥ यवरिजनकाचाजावश ॥ कायबोलताजाहाला ॥ ९२ ॥ तु ॥ विजय ॥
 सिमंगलाअपुलंवर्तमान ॥ मगलुमाशिमुजेननिकाणा ॥ यवरिकुशबोलेहासेना ॥ अणोसावधानअकाया ॥ ९३ ॥
 जानकिउदरकमकमुध्य ॥ तंतिनिदोचेजन्मलेमिलिदा ॥ अत्रकाएंकृतीनिसुबध्य ॥ पिठकरितोरणांरणि ॥ ९४ ॥
 वालिकलातयुसपुर्ण ॥ तेषाचआमुचंकेलेपाठणा ॥ तंनतरंमुंजिवंधन ॥ करनिवधपठविले ॥ ९५ ॥ सांख्य
 शास्त्ररामचरित्रा ॥ धनुर्वेदपठविलसिमय ॥ तंनिमुचंमातेचातातपरिकर ॥ वालिककृषिजाणया ॥ ९६ ॥ मातेच्या
 वेवरेकरनि ॥ आर्गवेकलिनिहेत्रअवनि ॥ तैसंबासिधरिलेमनि ॥ करंधरणनिवेर ॥ ९७ ॥ किंमात्रेवारेवैनतासुत ॥

॥ विजय ॥
॥ ५ ॥

6A

उरंगसंकरितसमस्त। तैसंचिकरणेयये। आश्रयिहितिर्धारे॥१७॥ तुवांसाडिलजैरिशितासति॥ तैवगठलितु
 श्रित्ति॥ तुजबैसाअविवेकनिश्चिति॥ हुजासर्वथाअसेना॥१८॥ असेअकतरामचंद्र॥ शितावाठउनिदयासमद्र॥
 हृदयपिठनिसेर्वश्वरा॥ धरणिवरिपडियला॥१९॥ मुठनासांवरनिपुठति॥ मागुतिउठिलारधुपति॥ पुढेवमिषण
 मारति॥ तयांप्रतिपुसतसे॥२०॥ सणहक्राणकेनदना॥ मरातेवतिविचारवा॥ तुमिंप्रतिविंवरिपुर्ण॥ जोनकि
 उदरिजन्मलिं॥२१॥ आरधरिक्कसेपुर्ण॥ निवांतरा॥ तववदना॥ शितासाडिलितेदिन॥ तोंतथुनिदिवसगण
 येले॥२२॥ दोदशवर्षतिनमासपुर्ण॥ गणितकस्त्रिणा॥ तववदुकरादोयेजण॥ येकयेकप्रतिबानति॥२३॥
 सणतिश्रुसाजाडवैसोन॥ वायवरितोरधुनंदन॥ तववदुकराडिलियेकवाण॥ हृदयपिठुनिउडविला॥२४॥ हस्तक्रोश
 अताहस्वाना॥ हास्यवरितजगन्मोरुना॥ मणहवाप्रलायुना॥ वस्यकदांहिनहेति॥२५॥ आलायुधयचक्रावे
 यथार्थ॥ सणानिउभारहिलारधुवाथि॥ जजेवाणसांडिता॥ तेनिफ्रजालबाकाशि॥२६॥ विमानिइद्रादिसुरवर॥
 अम्विर्यवरिततिपैथोर॥ सणतिरामाचंसामर्थबपार॥ जालेकाथयेसमई॥२७॥ अक्राडिचिंबनेव्यर्थपुर्ण॥

(७)

श्रीराम ॥
॥५॥

तैसेनिर्भ्रजतिबाण ॥ मगकुशंमहाशस्त्रपुष्प ॥ निजवणिस्थापिले ॥ ८ ॥ चपळमाहबाणयुन ॥ रघुनाथहृदंमेह
 लापुर्ण ॥ मोहविलेकितपुत्रवदन ॥ मुद्ययेउनिपडियेला ॥ ९ ॥ रघुनाथपडतांशुमंडळि ॥ येकचहृत्तचहुकेजलि ॥
 पर्वलधेउनितेवळि ॥ हनुमंतपुढेंधाविनला ॥ १० ॥ त्यावरिटाकेनिजबाण ॥ सुचिंतपडलानलगतांक्षणा ॥ तौ
 गदाधेउनिविभिषण ॥ हाकेहेतपुढेंबाला ॥ ११ ॥ तोकुशंबाणायिडि ॥ लंकापतिचेहृदंभरला ॥ तौहिमुष्टि
 तपडिला ॥ नाहिउरलाकेणितेथे ॥ १२ ॥ मगलहुकुशदाधजण ॥ आलेरामाजवळिधोवेना ॥ पितापडिला
 जवदना ॥ वंदिलचरणप्रमभावे ॥ १३ ॥ रघुपतिचासु ॥ रघुनाथपडला ॥ कुशंआपुलमस्त्विकंधातला ॥ कुंडलेकोसुअ
 कटिमेस्वका ॥ सर्वहिलेईलाकुशतेका ॥ १४ ॥ सौमित्रा ॥ विदुभोगंकाडुनि ॥ लहुलेईलातदियाणि ॥ मगशामकृष्णधुत
 नि ॥ दिव्यरथिवेसला ॥ १५ ॥ लहुवणदादापरियेथे ॥ वाबतरंधरोनिबाअमशि ॥ नेउनिदारकउंमातेथे ॥ स्व
 कावयाशिसर्वदे ॥ १६ ॥ मगनाकिनिळमासति ॥ पुढिंघतनिवेसलेरथि ॥ जाबुवेतबंगहदिसि ॥ वीठितवि
 चालविले ॥ १७ ॥ आगेरवरडतिशुमिवरि ॥ जांबुवंतद्रुणमारुतिजवधरि ॥ उठवेगंतुंसडकरि ॥ युध्यकरंययंशि ॥ १८ ॥

॥विजय ॥
॥५॥

(३९)

मगबोलेहनुमंत ॥ पुढें बहुत जाहे कार्यार्थ ॥ त्रिसुवननाथशिलाकांत ॥ तोहि मुठितपडियेला ॥ १९ ॥ अग्निमेलिवा
 चंमिसधेनुन ॥ धनुज्यानीकें चंद्रशन ॥ शक्तिचें सामर्थ्यदासण ॥ केलें विद्वान्जलक्या ॥ २० ॥ असोबाश्रामाजालिदो
 धेकिशोर ॥ रथारकोलें उतरले सत्कर ॥ अठंकारमंडितसुंदर ॥ आश्रमात प्रवेशले ॥ २१ ॥ कुशासन्मुखदरिक्ता ॥
 त्यानकिसअसागमला ॥ किंरघुनाथविआला ॥ त्यासाविलाजुचका ॥ २२ ॥ मगतेदोर्धेहिकुमरा ॥ साष्टांगचा
 लितिनमस्कार ॥ शिलेशिआलागहिवर ॥ दोधेहदंडाकंगिले ॥ २३ ॥ शिलेचे वृंतिमिठियालुना ॥ दोधेसांग
 लिवर्तमान ॥ रामसमेवतबंधुचौचेजण ॥ रणागर्धिपदविले ॥ २४ ॥ अकृतं चिबैशिमात ॥ शिलापडलिमुठो
 गत ॥ सर्वेचिउठिलिनाकंदत ॥ हृदयपिठितेकेविआला ॥ मसपुत्रेसागरकेविसेशिला ॥ जंबुकुमुगेंद्रकेविंध
 रिला ॥ दिपेतजेंकाकबंडका ॥ वासरमपिअसाहो ॥ २५ ॥ क्षणत्रिसुवनेश्वरसावका ॥ तोरणिकेविलुह्यासांप
 ळला ॥ अरेपित्रुवच्येकेसविला ॥ जागोनियांबाकहा ॥ २६ ॥ दणप्रहरसंगेलवज्ज ॥ पतंगेगिकिलावैश्वानरा ॥ सर्ष
 पसारेभोगेंद्र ॥ शिवाकेशिदडपलि ॥ २७ ॥ मक्षिकेचापसुवातसुटला ॥ लेणेमेतकेविउडाला ॥ मुंगिन्यामुखवाते

श्रीराम॥
॥७॥

५

क

विहारता॥ प्रकयमेधजैसाको॥२९॥ तंदुकभोरंबैरावत॥ तैसापडलामुर्धित॥ पुष्पप्रहरंबहुत॥ पाताककुर्मदुस्वा
वला॥३०॥ तोकुशलहुनेकाबोसत॥ मातेतेपीडिलेमुर्छगत॥ आताउठतिलसमस्व॥ चिंतकांहीनकरावि॥३१॥
आश्रिबाणिलिवाब्बरे॥ वृष्याशिवंधिलिसमेथं॥ नज्यादेततिबहुसुंदरे॥ पांहेबरेंबंवेतुं॥३२॥ मगजगंन्मात
पाहात॥ तोहुनुमंतनकनिकजांबुवंत॥ किरदेखेनिबहुत॥ आश्रिथेकरंअंतरिं॥३३॥ मणेबाककांचेसाम
थेदातण॥ माहविरबाणिलेधसन॥ झणेयाशिवेखेदेतापूर्ण॥ तज्जनिर्माणहोईका॥३४॥ मगपुत्रशिश्येने
अवसीरं॥ अरेहेवाबरठेउंकयतिधीरं॥ नेउनिसाजवनातरिं॥ आपुलियास्वस्थाना॥३५॥ मगभोवडिलेपुढि
धसन॥ दुरदिधलेभिरकाउन॥ माहविरविरबातठन॥ राधवाकेडपकाले॥३६॥ रणिसावधजालारधुविरा॥
तोपकतविआलेवान्तरा॥ सांगलिसर्वसमाचार॥ वाकिकांचेआश्रमिवा॥३७॥ आश्रिमत्याचेभिसधेउनी॥ ज
उनिपाहिलजनकनंदिनि॥ शामकृष्णदोघेधेउनि॥ आश्रमोगणिपुजिता॥३८॥ सुमेवरथबाणिलकंकार॥ घेउ
निगेलेहाथेकुमरा॥ जैसासुपर्णजिकिलश्रिधरा॥ तैसाविचारयेधंजाला॥३९॥ किंनंदिनेजिकिलाउमारमण॥

विजय॥

॥७॥

8A

किंजापुत्रास्त्रिफळमारेकरु॥ वृक्षजैसाजायमोडोन॥ तैसेंचयेथेंपूर्णजालें॥ ४०॥ (सुर्यापासुनिजालेंआमाक) तलेणेंचि
 यशिकाछादिलेताकाक॥ तैसेंबोलतांतमाकनिक॥ उगाचिराहिलाक्षणपरि॥ ४१॥ समाचारबैकेनिविपरित॥
 पाताकिहुनिअकस्मात्॥ वाल्मिकमुनिआलाधांवत्॥ आश्रमाशिकापुलिया॥ ४२॥ शिलेनेसांगितेलेंवर्तमान॥
 शामकृष्णअणिलाधत्त॥ भगवान्मिकमुनिहंसेन॥ घेउनिमुनिजनउठिता॥ ४३॥ रणांगणाप्रलिवेउन॥ अद्भुतकरणि
 केतिपूर्ण॥ कुमंडलोदकशिंपेन॥ दृक्कवधेउठविलें॥ ४४॥ तदामपमरधरावुचन॥ अदिकनिधोरताहान॥ निद्रिस्तांपरि
 उठोन॥ उभेवकलेतेकाकि॥ ४५॥ यावरिवान्नेकयेउन॥ श्रीरामशिविद्विधेनेआलेंगन॥ ह्मणेरधवातुंसर्वज्ञ॥ कर्तुत्वपु
 र्णतुसंचिहें॥ ४६॥ सर्वाचारवशाजवया॥ लिकतुंवाक्रेतिस्वगया॥ येरिवेंशितातुजपासुनियां॥ दुरकोठेंगेतिपां॥ ४७॥
 अनंतब्रह्माजचाकर्ता॥ तोतुंपुराणपुतधरधुनया॥ लठिकेचिबाहुरजातां॥ नेणतपणपरिथेले॥ ४८॥ श्रीरामस्मणे
 युध्यकरनि॥ दोघाशिजिंकिनसमरंगणि॥ म्याआपुलिनियांणकरणि॥ द्वाविलिनाहिनयाले॥ ४९॥ हौसेनिबोलेवाकि
 ककृषि॥ हस्तत्वाठकालागतंआगशि॥ तरिकाधेकरनिमानशि॥ हस्तकायछेदावा॥ ५०॥ भोजनकरितांनकरुन॥

श्रीराम ॥
१८१॥

७

जिकेशितलतादंत ॥ तरिकोणावरिहोमतेय ॥ करावासांगराजेन्द्रा ॥ १७॥ कनककोपलंकांतवीर ॥ रत्नप्रभायालुईधि
 कोहरि ॥ काष्ठयेउनिनिर्धारि ॥ दृक्षमारिखापुलिफळे ॥ १८॥ युक्तगोडविरससला ॥ प्रवाहगंगेशिधिरिबवोला ॥ प्रभ
 वीरिद्विपककोपला ॥ तैसामाडलाविचारयेथ ॥ १९॥ जगदासाबयोध्याधिपति ॥ तुश्यंविद्याचिबगधिगति ॥ जा
 लावेपुत्रवर्दनिम्बिल ॥ गर्जनिकिंराघवा ॥ २०॥ वानिकोचवालबेकेन ॥ जोलेराघवचिसमाधान ॥ तेदिवशि ॥ विजया ॥
 शिनारमण ॥ राहिलातेथेपरिवारशि ॥ २१॥ केरुतसुभवनिलरघुनंदना ॥ तोसाहकापाहावयाजयना ॥ सक ॥ १८१॥
 करजसाहितसेन ॥ त्वरेकरुनिधावले ॥ २२॥ शुकुचरुमंतधावति ॥ हेममयशि विरंडमिंकीरति ॥ अयोध्या
 जनवगेधायति ॥ मोहोछावपाहावया ॥ २३॥ वरिधेतिरुजधर ॥ कौलुकेपाहोआलसतर ॥ हेमोवरसमशि
 रघुविर ॥ सर्वासहितबैसला ॥ २४॥ नित्यनेमसातनिरधुविर ॥ सुतनवस्त्रजंककार ॥ घेउनियारामवंद्रा ॥ सभा
 मंडपिवैसला ॥ २५॥ वानिकेबाधमाप्रतिजावन ॥ लहुकुराबाणिशामकर्ण ॥ राघवापाशिचेतना ॥ तेचक्षणीपा
 तला ॥ २६॥ इद्रादिदेवगणपाहति ॥ सर्वरुपसादरावलेकिति ॥ सणतिकेवकरघातमाचामुति ॥ दान्किपुत्रादिसतिह ॥ २७॥

(१४)

शामसुंदरदोषेजण॥ विशाकिसुहास्यवदन॥ पुत्रासमेवेतरघुनंदन॥ समसमानतिनिर्मुक्ति॥ ६२॥ गाजिलितेथेंबाका
 रावाणि॥ राघवाहंतुसेपुत्रपाहनयनि॥ धन्यधन्यहणोनि॥ मस्तकेजलवितिसुरवर॥ ६३॥ वस्त्रांजककरिमंडित
 पुण॥ लहुकुशरामाजवकियेउन॥ हातिलेसेचिधनुष्यबाण॥ घालिलोटागणपितेयाशि॥ ६४॥ जालयकचिजय
 जयकार॥ वंदारकवर्षतिसुमनत्रार॥ रामशिप्रार्थितिनुपवर॥ पुत्रांशिक्षमेदेईजे॥ ६५॥ मगउगेनियारघुनंदन॥
 हृदईधरितेदोषेजण॥ पढतिशतकेटिसामायण॥ वाक्यानिहाविलि॥ ६६॥ त्यावरिभारंभिलेगायन॥ अव
 तारचरित्रलिकागहन॥ तेजेकलाजगन्मोहन॥ सप्रेमजालतेकाकिं॥ ६७॥ चौदाविद्याचौसाष्टिका॥ वाकानिज
 ज्याशिक्षासकका॥ जैसाकरतकिचाभावका॥ अज्ञानविद्यातेशापरि॥ ६८॥ वानिकशिष्णपेरघुनाथ॥ ध
 न्यधन्यलुसेगुरुत्व॥ विद्याभ्रम्यासपुष्यअज्ञुन॥ वाक्यांहातकरविले॥ ६९॥ वानिकेहेतप्रत्येतर॥ लुसेविर्यसा
 मर्थपरमतिह॥ मासेगुरुत्वसाचार॥ कायकरिलनुसनेचि॥ ७०॥ असोसैमित्रभरथज्ञानुद्ध॥ सुश्रिवळाणिविभि
 षण॥ हनुमंतबाणिसककसैन्य॥ शिताबाणावयाचिलिले॥ ७१॥ आश्रमापुढयेउन॥ घालितिसककठोरंगण॥

श्रीश्यामा ॥
११९५

१०

वाल्मिके बहूत प्रार्थुन ॥ शिलाब्जपिलिवाहरि ॥ ७२ ॥ लोसककहिसद्रदहोउन ॥ धरितिजगन्मानेचेवरण ॥ पुढंठ
 विलेसुखासन ॥ जानकिशिवैसावया ॥ ७३ ॥ सककक्रुषिपल्याचिपुजाकुरनि ॥ जानकिवैसर्विलसुखासनि ॥ स
 मुद्राशिभेराक्यामंदाकिनि ॥ तरेकुरनिवालिले ॥ ७४ ॥ जवकिहेरवेनिरधुनाथ ॥ खालेउतरलिजगन्माता ॥
 वाल्मिकेयेउनितवता ॥ रधुनाथाप्रनिबोलत ॥ ७५ ॥ पंचभुतंगशिभिदित्य ॥ रामालुंसाक्षपजाहेशिहृदयस्क ॥
 निःपापजानकिनिश्चित ॥ आदिमध्यभवसानि ॥ ७६ ॥ शिष्यन्युर्भकव्याजनककुमारि ॥ आजिवरिपाळलि ॥ ११९५ ॥
 ॥ २५ ॥ आतापाकिलुदशशतवदनारि ॥ अद्यगघरेश्येते ॥ ७७ ॥ मागुतिवदतिबाकाशवाणि ॥ सत्यस
 लिजनकनंदिनि ॥ मगश्रिरामंआलियुनि ॥ वामंरुवरिव्यविति ॥ ७८ ॥ लागतावाद्यावागजर ॥ मगवाल्मिकेशि
 प्रार्थिरधुविर ॥ संगेसककक्रुषेधर ॥ जयोद्येशिचलाहो ॥ ७९ ॥ परिपूर्णकरावामाहायज्ञ ॥ सककितेकामानि
 लंवचना ॥ मगवाल्मिकेदिमुनिजना ॥ दिव्यवहनिवैसले ॥ ८० ॥ जानकिस्मिहितरधुनंदन ॥ राथिवैसलाजैसा
 चंडकिर्ण ॥ होहिकडेहोद्येनंदन ॥ विराजमानेशोभति ॥ ८१ ॥ मस्किविराजेदिबच्छत्र ॥ मित्रपत्रेभतिविचित्र ॥

॥ विजया ॥
११९५

१०४

निजमकनलिअपार॥ चामरेवरिडाकिति॥ ५२॥ मकरविन्देपुढेचालति॥ भाटसुर्यवैशवाखाणिनि॥ परमगज
 नेअयोध्येप्रति॥ श्रीरघुपतिप्रवेशला॥ ५३॥ कौशल्यासुमित्राप्रमेकरनि॥ शिंतेशिवाकिंगितितयेद्वणि॥ लहु
 कुरदोधावरनि॥ मुद्वोवाकिकेशला॥ ५४॥ यामप्रिप्रविनिशेषहोति॥ यज्ञदिहाचेउनिरघुपति॥ पुर्णकैलिपु
 णाहुति॥ यज्ञसमासिपावकिला॥ ५५॥ वस्त्रेअककारद्वयअपार॥ देउनिगैरीविलमुनेश्वरा॥ वर्णितरघुविरात्रे
 चीरत्रा॥ आपुन्याआश्रमाप्रतिगैले॥ ५६॥ रायादिश्रिताद्वणि॥ श्रीरामचिआज्ञाचेउनि॥ शिंतेचामहिमाव
 णितवदनि॥ निजनगराप्रतिगैले॥ ५७॥ विभिषणासुरवप्राणसखे॥ गौरउनियाअतिरिरेवे॥ आपुन्यास्वस्व
 काप्रतिसुरेवे॥ पाठविलेतयेककि॥ ५८॥ जानाकिकुनरासहित॥ अयोध्येशिराजकरिरघुनाथ॥ हनुयाप्रभक्त
 रितांबहुत॥ अक्षईसुखपाविजे॥ ५९॥ परमसंकटहारीणहनुया॥ विजईहययोनावक॥ पाहतांरामवि
 जयप्रथी॥ सर्वचिंताहरेपै॥ ६०॥ यावरिकथागोडबहुत॥ लिळाकैशिदाविलरघुनाथ॥ तोशर्वटिचामाया
 यथेथी॥ सादरतांपरिशिजे॥ ६१॥ चळिसजाध्यायनवथायथ॥ त्यांतयेकगोडउरलाबहुत॥ जैसामु

६

11

श्रीराम ॥
११००

गुटाकरिमणिशककत ॥ तैसाबाध्याचपुठलजसे ॥ १२ ॥ ब्रह्मानेहास्वाभिसमर्था ॥ श्रीधरवरदापंढरिबाया ॥ हा
ग्रंथवचितामका ॥ सुवरक्षिंविजांगे ॥ १३ ॥ रामविजयचंद्र ॥ समतवा ॥ कनाटबाया ॥ मंडप
चतुरा ॥ बव त्रिशक्तिमाध्यायगा ॥ ११४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ



॥ विजया ॥
११०१ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com